Tender Heart High School, Sector-33B, Chandigarh.

कक्षा - तीसरी विषय - हिन्दी साहित्य

शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : तरंग हिन्दी पाठमाला - 3

पाठ - 2 साहसी बालक

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा तीसरी की हिन्दी पाठ्यपुस्तक 'तरंग' हिन्दी पाठमाला भाग-तीन में दिए पाठ-2 'साहसी बालक' को पढ़ेंगे व समझेंगे।

बच्चो ! यह पाठ कुछ ऐसे साहसी बालकों के बारे में है जिन्होंने अपने अद्वितीय साहस से कुछ बच्चों की जान बचाई। आइए, पाठ को विस्तार से समझते हैं। हम सब के जीवन कभी ऐसा समय आता है जब हमें कुछ निर्णय लेने होते हैं। ऐसे समय में हमें साहस से ही काम लेना पड़ता है। एक अगस्त 2006 को हरियाणा की एक स्कूल बस बच्चों को लेकर पश्चिमी यमुना नदी के किनारे दौड़ रही थी। बस में बैठे सभी बच्चे खुश थे। उनका सफ़र आनंद से कट रहा था।

अचानक बस ड्राइवर के नियंत्रण (काबू) से बाहर हो गई और नहर में जा गिरी। किसी को होश न रहा। सब अपनी-अपनी जान बचाने की कोशिश करने लगे। भयभीत बच्चे पानी में गिरते ही बस की

कक्षा - तीसरी

विषय - हिन्दी साहित्य शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

खिड़की और शीशे तोड़कर बस से बाहर पानी में निकल गए। उन बच्चों में से एक बालक जिसका नाम अमरजीत था, वह इस परिस्थिति में बिलकुल नहीं घबराया। हिम्मत करके वह नदी के किनारे तक पहुँच गया, उसने देखा कि उसके अन्य साथी तैराकी न आने के कारण मौत से जूझ रहे थे। अपनी जान की परवाह किए बिना वह पानी में कूद पड़ा। इस प्रकार एक-एक करके उसने अपने तीन साथियों को डूबने से बचाया।
उसी बस में सत्रह वर्ष की एक लड़की बबीता भी सफ़र कर रही थी। वह बचते-बचाते किनारे पर आ गई। इस साहसी लड़की ने कोई रस्सी पास न होने पर अपने दुपट्टे का इस्तेमाल कर छह बच्चों की जान बचाई।
इस अद्वितीय साहस के लिए अमरजीत और बबीता को 24 जनवरी, 2007 को दिल्ली में प्रधानमंत्री महोदय द्वारा राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार से सम्मानित किया गया तथा 26 जनवरी की शानदार परेड में इन्हें सजे हुए हाथी पर बिठाकर सम्मान दिया गया। हर वर्ष देश भर में से 25 साहसी बच्चों को यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है। 25 जनवरी की संध्या को राष्ट्रपति भवन में इन बच्चों के लिए भोज का आयोजन भी किया जाता है।
केरल के रहने वाले सेबास्टियन विनसेंट 19 जुलाई, 2016 को अपने मित्र के साथ साइकिल से स्कूल जा रहे थे। वे रेलवे क्रॉसिंग पार कर ही रहे थे कि एक बच्चे अभिजीत का जूता रेलवे ट्रेक में फंस गया और वहीं गिर गया। सामने से तेज़ रफ़्तार में रेलगाड़ी को अपनी ओर

कक्षा - तीसरी

विषय - हिन्दी साहित्य शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

आते देखकर सेबास्टियन ने मित्र को बचाने की कोशिश करते हुए पूरे ज़ोर से अभिजीत को ट्रेक से दूर धकेला और खुद भी रेलगाड़ी आने से पहले कूदकर ट्रेक से दूर तो हो गया परन्तु इसमें सेबास्टियन के दाहिने हाथ की हड्डी टूट गई परन्तु उसने साहस से अपने मित्र अभिजीत की जान बचा ली थी।

बच्चो! अमरजीत बबीता और सेबास्टियन की सच्ची कहानियाँ हमें सिखाती हैं कि मुसीबत आने पर हमें धीरज और साहस से काम लेना चाहिए। हमें भी इन बहादुर बच्चों की तरह मुसीबत में फँसे लोगों की मदद करने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए।

गृहकार्य

सभी छात्र इस पाठ को दो-तीन बार ऊँचे स्वर में पढ़ेंगे तथा निम्नलिखित कठिन शब्दों, सुलेख, शब्द अर्थ तथा वाक्य बनाओ को अपनी-अपनी कॉपी में लिखेंगे।

कठिन शब्द

1. निश्चय 2. पुरस्कार 3. दुपट्टा 4. पत्थर 5. भयभीत 6. व्यक्ति 7. निर्णय 8. ड्राइवर 9. हिम्मत 10. नियंत्रण।

सुलेख

सभी छात्र अपनी कॉपी में एक पृष्ठ सुलेख के रूप में लिखेंगे। सुलेख सब सुन्दर लिखाई में लिखेंगे।

शब्द अर्थ

1. अद्वितीय - अनोखा, बेजोड़ 2. बाज़ी - दाँव
3. साहसी - हिम्मती / हिम्मत वाला 4. पुरस्कार - इनाम
5. भयभीत - डरे हुए 6. जूझना - लड़ना, भिड़ना

कक्षा - तीसरी

विषय - हिन्दी साहित्य शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

वाक्य बनाओ

1. साहस - हमें कठिन समय में साहस से काम लेना चाहिए।
2. किनारे - इस नदी के किनारे एक गाँव है।
3. नियंत्रण - हमें क्रोध में नियंत्रण रखना चाहिए।
4. पुरस्कार - अध्यापक ने प्रथम आने वाले छात्र को पुरस्कार दिया।
5. कोशिश - हमें आगे बढ़ते रहने की कोशिश करनी चाहिए।

धन्यवाद।

[Last Page]